जनजाति समाज और पर्यावरण के संबंध का भौगोलिक अध्ययन

डॉ. संदीप रुपरावजी मसराम
सहाय्यक प्राध्यापक – भूगोल विभाग,
वसंतराव नाईक शासकीय कला व समाजविज्ञान संस्था,
पंडित नेहरू मार्ग, संविधान चौक, नागपूर ४४०००१.
इमेल – sandip.masram84@gmail.com
मोबाईल क्रमांक – ८९८३७१८१३१

सारांश –

भारत यह भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक विविधता का देश है। यहा पर भूदृश्य, क्षेत्र, जलवायू, मिट्टी, वनस्पती, प्राणी इन भौगोलिक कारको में स्थान अनुसार परिवर्तन दिखाई देता है । भौगोलिक कारको का मानव के जीवनपर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव पडता है। विश्व के मानव समाज में भारत की सभ्यता प्राचीन सभ्यताओ मे से एक है। सभ्यता विभिन्न समाज के विचारों से जन्म लेती है। समाज यह मानव के समुदाय के मध्य होने वाली आंतर्क्रिया तथा अंतर्संबंध का अमूर्त रूप है । प्राचीन युग से मानव का जंगल से सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक रिश्ता रहा है। भारत में जनजाति समुदाय की जीवनयात्रा में जंगलो का अनन्यसाधारण महत्व है। जनजाति समुदाय के लोग जल, जंगल और जमीन को पुजते है। जनजाति समुदाय के अधिसंख्य लोगो की उपजीविका तथा आर्थिक क्रियाए जल, जंगल और जमीन पर निर्भर होती है। ईसिलीये जनजाति समाज जल, जंगल और जमीन को आराध्य मानते है तथा उनको पुजते है। प्रस्तुत संशोधन पत्र में जनजाति समाज तथा पर्यावरण में मध्य के भौगोलिक संबंध का अध्ययन किया गया है| जनजातिय दृष्टीकोन से भी जल, जंगल और जमीन का अध्ययन करना भी जरुरी है। प्रस्तुत संशोधन पत्रमें जनजातीय दृष्टीकोन से भारत के पर्यावरण का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन से स्वस्थ पर्यावरण बनाये रखने में जनजाति समाज की भूमिका महत्वपूर्ण रही है।

बीज संज्ञा – जैवविविधता, परिस्थितीकी तंत्र, वनौषधी, शाश्वत विकास, वनसंरक्षण, वनसंवर्धन.

प्रस्तावना-

मानव अपने विकास के लिये प्राकृतिक साधनो का मर्यादा से अधिक विदोहन कर रहा है । आधुनिक युग में मानव से जंगल को धोका निर्माण हुवा है । जिससे प्राकृतिक पर्यावरण का संतुलन बिघड रहा है। ऐसे ही प्राकृतिक पर्यावरण का संतुलन बिघडते रहा तो प्रकृती का अंत का कारण मानव बन सकता है । जिससे काई सारी प्रजातीया और मानव का अस्तित्व भी नष्ट हो सकता है। ढेर सारी जीव प्रजातीया नष्ट हो चुकी है और कुछ प्रजातीया नष्ट होने के कगार पर है । प्राचीन भारतीय ज्ञान तथा इतिहास का अध्ययन करने पर इस समस्या का हल मिल सकता है । जंगलो में रेहने वाले जनजाति समाज प्राकृतिक पर्यावरण तथा जीवो के साथ ख़ुशी से रेहने की कला से अवगत है । जनजाति समाज जंगल से संसाधन लेते है उसी के साथ जंगलो का अस्तित्व स्वीकारते हुये जंगलो को पुजते है और सन्मान तथा संरक्षण देते है। प्रकृती के साथ उनका ये एक अलिखित समझोता है जिसको जनजाति समुदाय में रेहने वाले सभी व्यक्ती मान्य करते है । जनजाति समाज के जंगल के साथ के अलिखित समझौते, मान्यताए तथा नियमो को लिखित स्वरूप में परिवर्तीत करने की आवश्यकता है ।

अध्ययन का उद्देश -

जंगलो के संसाधानो का अतिरिक्त उपयोग हो जाना यह गंभीर समस्या है । प्राचीन भारत के सभ्यता में मानव के जीवन की शुरुवात तथा उनके जीवन का अंत जल, जंगल और जमीन से होता था । जल, जंगल और जमीन भौतिक घटको का उचित इस्तेमाल, संवर्धन तथा संरक्षण भारत के जनजाति समाज ने जिम्मेदारी से किया है । अतः जनजाति दृष्टीकोन से जंगलो का अध्ययन करना अध्ययन का उद्देश है । भारत के जनजाति समाज और जंगल के मध्य संबंध का ज्ञान तथा भौगोलिक अध्ययन इस संशोधन पत्रका मुख्य उद्देश है । साथ में ही इस संशोधन पत्रके अध्ययन के गौण उद्देश निम्नलिखित है ।

भारत के जनजाति समाज के सामाजिक एवं सांस्कृतिक विधी में जंगल के प्रभाव का अध्ययन करना ।

भारत के जनजाति समाज के आर्थिक कार्यो में जंगल के प्रभाव का अध्ययन करना ।

भारत के जंगलो का वनसंरक्षण, वनसंवर्धन एवं वनो का शाश्वत विकास में जनजाति समाज के भूमिका का अध्ययन करना ।

अध्ययन का महत्व -

जनजाति समाज के अध्ययन के लिये जो भी संदर्भ साहित्य उपलब्ध है वो काफी नही है। जनजाति समाज का संपूर्ण सत्य जानने के लिये उनके नजरीये से वस्तुस्थिती का अवलोकन करना जरुरी है। जनजाति समाज के वयोवृद्ध व्यक्तियो से चर्चा

करके उनका जंगल विषयक ज्ञान को लिखित रूप से संग्रहित करना अनिवार्य है। इस ज्ञान के संख्यात्मक एवं गुणात्मक सामग्री का अभिलेख निर्माण होना जरुरी है।

प्रस्तुत अध्ययन से जंगल के साथ जंगल के जैवविविधता तथा परिस्थितीक तंत्र का अध्ययन होगा। जंगल व्यवस्था के संरक्षण में जनजाति समाज से जानकारी प्राप्त कर सकते है। जिससे न केवल मानव समाज का अपतू संपूर्ण वन प्रदेश को भविष्य में लाभ होगा। जंगल के वनौषधी के अस्तित्व के आधार पर दुर्लभ वनौषधी, खतरे में आयी गई वनौषधी, लुप्त होने के कगारपर आयी वनौषधी तथा लुप्त हो गई है वह वनौषधी इस तरह से वर्गीकृत किया जा सकता है। जो वनौषधी का अस्तित्व खतरे में है और जो वनौषधी लुप्त होने के कगार पर है उनका संरक्षण तथा संवर्धन किया जा सकता है।

परिकल्पना –

प्रस्तुत संशोधन पत्रके अध्ययन द्वारा जंगल सुधार प्रयास तथा पर्यावरणीय अवनती समस्या हल करने के लिये जनजातिय परंपरागत विधी एवं उपायो से बदलाव की संभावना का अनुसंधान करना है। समाज के नई पिढी को वनौषधी का आकलन तथा वनौषधी का सही तरीके से उपयोग करने की विधी पूर्वजो से सिखने की चुनौती है। प्राचीन भारतीय मौखिक ज्ञान को लिखित रूप में परिवर्तीत करना जरुरी है। अनुसंधान कर के इस ज्ञान को मूर्त स्वरूप देना एक समस्या हो सकती है । वनक्षेत्र अवासीय क्षेत्र से दूरस्थ होते है । वहा पोहोचने के लिये यातायात के मार्ग तथा यातायात के साधनो की सुगमता उपलब्ध नही है। जनजाति समाज की अपनी भाषा है । जनजाति समाज के पास का ज्ञान हमे उनके भाषा में ही प्राप्त होगा । उस ज्ञान को अन्य भाषा में अनुवाद करके उसका उपयोग करना संभव है । अनुसंधान तथा अध्ययन करने के लिये निम्नलिखित परिकल्पनाए है ।

भारतीय जनजाति समाज के पास प्रकृती का मौखिक ज्ञान है ।

जनजाति समाज का जंगल के साथ सामाजिक सांस्कृतिक संबंध है ।

परंपरागत तरीके से अगर जंगल के संसाधानो का उपयोग किया जाये तो मानव का शाश्वत विकास संभव है ।

जंगल के संसाधानो का परंपरागत तरीके से उपयोग करने की कला जनजाति समाज को अवगत है।

जनजाति समाज के लोग प्राकृतिक संसाधानो का शोषण नही करते है

मानव का हस्तक्षेप कम रहने वाले जंगल क्षेत्र में स्वस्थ परिस्थितीक तंत्र है ।

विधीतंत्र –

प्रस्तुत लघु अनुसंधान के लिये गौण आधार सामग्री का उपयोग किया जाने वाला है। उपलब्ध संदर्भीय किताबे, समाचार पत्र, इंटरनेट, विभिन्न संकेत स्थल, नियतकालिक किताबे, संशोधन ग्रंथ, संशोधन पत्र इत्यादी से प्राप्त सूचनाओका उपयोग किया गया है। प्राप्त साहित्य सामग्री को वर्गीकृत करके समाज विज्ञान के दृष्टी से वर्णन किया है।

जनजाति समाज और पर्यावरण -

परिस्थितीक तंत्र के सभी जीवो का स्वस्थ पर्यावरण महत्वपूर्ण स्थान है । भारत के वन प्रदेश में विभिन्न वनस्पती, पशु, पक्षी तथा जीव जन्तुओ का अधिवास है । जंगली वनौषधी, मौसमी फल - फुल, सागवान की तथा अन्य मूल्यवान लाकडिया, तेंदूपत्ता, शेहद, मोह फुल ऐसी कई सारे संसाधन का उपभोग विशिष्ट विधी के साथ जनजाति समुदाय कर रही है । इन लोगो से जंगल तथा जंगल में रेहने वाले जीवो को कोई धोका नही है । मानव के साथ पशु पक्षी भी उनके परिवार का अविभाज्य अंग है। भारत का जनजाति समाज प्राकृतिक पर्यावरण के साथ सामंजस्य से रेहते आये है। यहा के लोगो ने वन्य जीवो के साथ रेहने का पारंपारिक तरीका आत्मसात किया है। दैनंदिन जीवनक्रम में जनजाति समुदाय जंगलो से संबंधित सामाजिक संसाकृतिक कार्य करते है। उनके खान पान, पोशाख, रहनसहन, मनोरंजन, कला, नृत्य, छोटे बडे समारोह, पारंपारिक धार्मिक विधीया, स्वास्थ उपचार जंगल से संबंधित संसाधानो पर निर्भर है । इन सभी करको का लिखित साहित्य निर्माण करना भविष्य के लिये अनिवार्य है । प्रकृति के संसाधानो के सही उपगोग का पारंपारिक ज्ञान वयोवृद्ध जनजाति लोगो के पास हो सकता है । उनका जीवित अस्तित्व जब तक है तब तक इस ज्ञान को लिखित साहित्य परिवर्तीत करना जरुरी है । प्राकृतिक संसाधानो के उपयोग की सीमा का निर्धारण करना जनजाति समाज से सिखना आवश्यक है ।

प्रस्तुत संशोधन पत्रके लिये आदिवासी बहुल प्रदेश को चुना गाय है। भारत का जंगल फैला हुवा है। भारत के भौगोलिक प्रदेश में विभिन्न जनजाति लोगो का सदियो से वास्तव्य है। इन लोगो के जिंदगी में वन तथा वानोसे उत्पन्न होने वाले संसाधानो का महत्व अधिक है। इन संसाधानो पर जनजाति लोगो की उपजीविका आधारित है। जनजाति समुदाय का समाजिक जीवन भी जंगल से प्रभावित है। उनके जन्म से लेकर मृत्यू तक की विधिया, त्योहार, रित - परंपरा, आंतर्क्रिया, उपजीविका तथा व्यवसाय प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष भौतिक पर्यावरण पर निर्भर होती है। जंगल भौतिक पर्यावरण का अभेद हिस्सा है। इसीलिये जनजाति समाज और पर्यावरण के मध्य संबंध का भौगोलिक अध्ययन करने आवश्यक है ।

भारत में अंग्रेज आने से पेहले वन क्षेत्र का प्रमाण अधिक था । आज के समय भारत में जंगलो का क्षेत्र प्राचीन युग से कम हुआ है । भारत में औसत न्यूनतम वनो का प्रमाण होना चाहिये उस से भी कम प्रमाण है । विभिन्न विकासात्मक कार्यो के लिये वन कटाई करना पडता है लेकीन उसी वक्त काटे गये वनो की संख्या में नये पेड लगाना भी जरुरी है । काटे गये पेडो की संख्या के अनुपात से वृक्षारोपण एवं वृक्षसंगोपन की क्रिया नही हुई जिससे भौतिक पर्यावरण का संतुलन बिघड गया है । लेकीन जनजाति क्षेत्र में भूमी एवं वनो का अनुपात सामान्य है । जंगल संरक्षण के लिये जनजाति समाज ने समय समय पर आवाज उठाई है । जंगल संरक्षण तथा संवर्धन में जनजाति समाज का योगदान अनन्यसाधारण है । वनसंरक्षण तथा वनसंवर्धन में जनजाति समाज के भूमिका का अध्ययन करना आवश्यक है ।

जनजाति समाज की सामाजिक सांस्कृतिक परंपरा का जंगलो के साथ गहन संबंध है। जंगल के विषय पर इस से पेहले अनुसंधान हुवा है। वन संसाधानो की प्राप्ती के लिये जंगल का अध्ययन अंग्रेजोने किया है। जनजाति समाज जंगल को पुजते है। उनके सामाजिक अतःर्क्रिया जंगल के साथ होती है। इसिलिये वे लोग जंगलो के शाश्वत विकास को ध्यान में रखकर वन संसाधन को अपने उपयोग के लिये प्राप्त करते है। साथ में वे यह भी सुनिश्चित करते है की, जंगल में रेहने वाले अन्य सभी वन्य जीवो को वन संसाधनो की प्राप्ती हो। अतः जनजातिय दृष्टीकोन से भी जल, जंगल और जमीन का अध्ययन करना भी जरुरी है। प्रस्तुत संशोधन पत्रमें जनजातीय दृष्टीकोन से भारत के जंगल का अध्ययन करने का प्रस्ताव है। वन संरक्षण, वन संवर्धन तथा वनो का चिरंतन विकास के लिये पारंपारिक रित से जनजाति समाज द्वारा उपयोग में आने वाली जनजातिय पद्धती का अध्ययन सामाजिक भूगोल के दृष्टीकोन से करना आवश्यक है ।

भारत में वनो के विषय पर विभिन्न विद्याशाखाओमें अनुसंधान हुवा है । वनसंसाधन तथा वनौषधी आयुर्वेद से लेकर जीव विज्ञान तक अध्ययन का विषय है । जंगल में रेहने वाले जनजाति समाज के लोगो को कई सारे वनौषधी का पारंपारिक ज्ञान है तथा अपने व्यावहारिक जीवन में वे वनौषधी का उपयोग भी करते है । विभिन्न वनौषधीया तथा उनका सही से उपयोग करना जनजाति लोगो की खोज है । ऐसे खोज का पेटंट जनजाति लोगोको मिलता है तो वे अपना आर्थिक सामाजिक जीवन सुखकर बना सकते है। पेटंट तथा उसको पंजीकरण करने की विधी सभी आदिवासी लोगो को पता नही । पेटंट के बारे में उनको ज्ञान देने की जरुरत है ।

जंगल के मौसमी वनसंसाधन से जनजाति लोगो को आर्थिक फायदा मिलता है । फल, फुल, वनौषधी, पत्ते, बेल, गोंद, लकडी,लकडी की खाल जैसे मौसमी वन संसाधन समय के साथ खराब होते है । इन मौसमी वन संसाधानो पर प्रक्रिया करने वाली प्रणाली जनजाति क्षेत्र में विकसित करना जरुरी है । जिससे वनक्षेत्र में उत्पन्न होने वाले संसाधन के लिये बाजार निर्माण करना संभव है ।

निष्कर्ष –

जंगल का संवर्धन करना यह मानव जाती के लिये भविष्य आवश्यक है। जंगल से संबंधित गंभीर खतरे तथा आपदा से बचने के लिये प्रबंधन करने में ऐसी नितीया सहायक हो सकता है। पर्यावरणीय अवनती से बचने के लिये या उसका प्रभाव कम करने अनुसंधान का अहवाल काम में आ सकता है। प्राचीन भारतीय ज्ञान का समाज को पता चलेगा। भारत के प्राचीन ज्ञान का आधुनिक ज्ञान से मिलाप कर के नये अनुसंधान को प्रेरित किया जा सकता है। इस ज्ञान में अनुसंधान तथा तकनिकी सहायता से निर्माण होने वाले ज्ञान को राष्ट्रहित में उपयोग किया जा सकता है। जनजाति समाज के विकास के लिये निती बनानी है, तो सबसे पेहले उनके विचार, भावना को सन्मान देते हुये उनसे चर्चा की जाये।

जंगल से प्राप्त संसाधन के अतिरिक्त उपयोग के कारण कम होते जा रहे है। साथ में ही जंगल से प्राप्त संसाधानो का सही उपयोग का तरीका सबको अवगत नाही है। जनजाति समाज के चुनिंदा लोगो को जंगल संसाधन तथा वनौषधी का ज्ञान है। उनसे इस मौखिक ज्ञान को लिखित ज्ञान में बदलना चुनौती है। कार्य करते वक्त भाषा भी एक समस्या है। जनजाति समाज की अपनी भाषा अलग प्रकार की है। जंगल, वनौषधी पर तथा जनजाति समाज पर मानववंशशास्त्रीय दृष्टीकोन से अलग अलग अध्ययन हुवा है। जनजाति समाज के उनके अनुभव से लिखे गये साहित्य उपलब्ध नही है। इस लिये आधार सामग्री का निर्माण तथा संग्रह शुरुवात से करना आवश्यक है। जनजाति समाज और पर्यावरण के बीच सदियो से सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक संबंध है और चिरंतन रहेगा।

संदर्भग्रंथ -

१. Bhatt D, Kumar R, Joshi GC, Tewari LM (2013). Indigenous uses of medicinal plants by the Vanraji tribes of Kumaun Himalaya, India. J Med. Plant Res. 7(37): 2747-2754

२. Joshi AK, Juyal D (2017). Traditional and Ethnobotanical uses Premna barbata Wall. Ex Schauer in Kumaun and Garhwal Regions of Uttarakhand, India and Other Western Himalayan Countries- A Review. Int. J. Pharmacogn. Phytochem. Res. 9(9): 1213-1216.

३. Joshi R, Satyal P, Setzer W (2016). Himalayan Aromatic Medicinal Plants: A Review of their Ethnopharmacology, Volatile Phytochemistry, and Biological Activities. Medicines. 3(1): 6.

४. Kumari P, Joshi GC, Tewari LM (2012). Biodiversity status, distribution and use pattern of some ethno-medicinal plants. Int. J. Conserv. Sci. 3(4): 309-318.

५. Pala NA, Negi AK, Todaria NP (2010). Traditional uses of medicinal plants of Pauri Garhwal, Uttrakhand. N. Y. Sci. J. 3(6): 61-65.

६. Prasad S, Tomar J (2020). Distribution and utilization pattern of herbal medicinal plants in Uttarakhand Himalaya: A case study. J. Med. Plants Stud. 8(3): 107-111.